

मनोज

कॉमिक्स

संख्या 1012

४०

पंजा



प्रिन्ट एडिशन एडिटर



मनोज कॉमिक्स

के नये सैट के कॉमिक्स

ये है विध्वंस	(विध्वंस)	मर गया बूटाखाटू (जटायु)
दो शैतान	(त्रिकालदेव)	फंदा (थिल-एक्शन-एडवेंचर)
हवलदार बहादुर और जिन्न की अंगूठी	भयानक	(भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र)

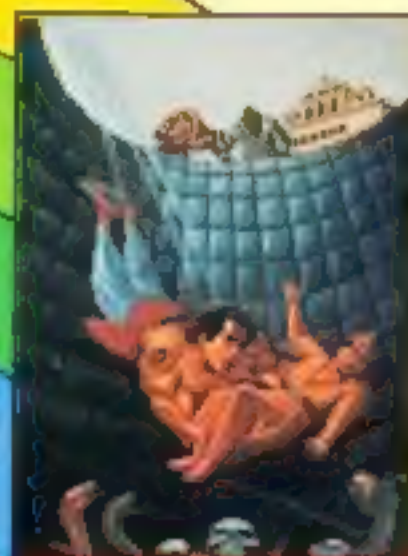
आगामी सैट



यंडर गर्ल
(राम-रहीम)



मुझे इन्द चाहिये
(इन्द)



शैतानों की ज़त
(त्रिकालदेव)



मुदों का टापू
(महाकली शैत)



शेयनाम का हत्थारा
(भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र)



कानून का रून
(थिल-एक्शन-एडवेंचर)

प्रकाशक : मनोज पॉकेट बुक्स, 1584 दरिया कला, दिल्ली-110 006

वितरक : राजा सेल्स कारपोरेशन, 761 मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110 009

© कॉपीराइट सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

पाप्पा

लेखक : अनसार अरुन्तर .

चित्रांकन : दिलीप कदम, तुषार लष्करे .

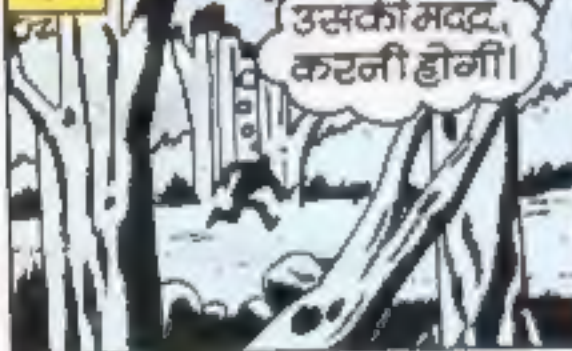
अमावस की काली रात में फॉरेस्ट ऑफिसर जयसिंह जंगल में अकेला बहुत लम्बा रहा था।



अचानक एक दर्दनाक चीख से गुंज उठा जंगल।



बहु आवाज की दिशा में दौड़ पड़ा।



और जब वह एक मुले स्थान पर पहुंचा—



...मगर इससे पहले कि वह फायर कर पाता-

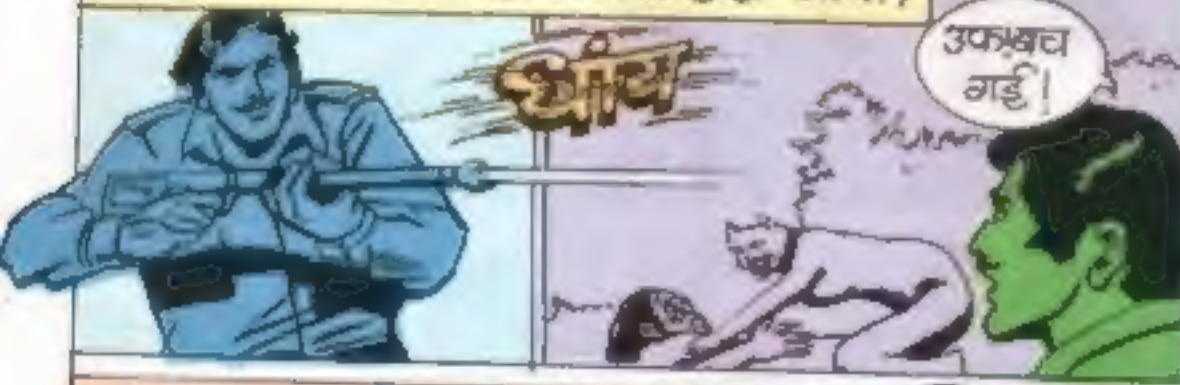


जयसिंह आश्चर्य और भय के कारण जड़ पड़ चुका रह गया।



गुर... गुर... मैं तुझे माफ नहीं करूंगी। हर अमावस की रात तुझे इसी तरह कष्ट झेलना होगा!

फिर अचानक जयसिंह की जैसे होश आया।



अगले पल बिल्ली पास की झाड़ियों में जा घुसी।



जयसिंह उस व्यक्ति के पास पहुंचा।



उस व्यक्ति ने चेहरे से हाथ हटाए।



जयसिंह डरकर पीछे हट गया।





...उस दिन रात ब्यारह बजे तक बुरु जी ने मुझसे कड़ा व्यायाम कराया...



...आधी रात के समय मुझे घर जाने की अनुमति मिली...



...कुछ दूर जाने पर सुनसान सड़क के किनारे एक व्यक्ति को बैठा देख मैं चौंका...



...डरना तो मैंने सीखा ही नहीं था, इसलिए उसका टोकड़ा उठा लिया...

चलो, जहां कहीं पहुंचा देता हूँ।

तुम सचमुच बहादुर हो।



काफी भारी है। पता नहीं क्या है टोकड़े में?



...कुछ ही देर में हम कब्रिस्तान पहुंच गए

डर तो नहीं लग रहा?

बिल्कुल नहीं। लेकिन तुम्हें यहां क्या काम है?



उस कब्र में मेरा एक मित्र दफन है, मैं उसके लिए दुआ करने आया हूँ।

अजीब आदमी है! यह कोई दुआ करने का समय है?



बस, यही रख दो और बैठकर जरा सांस ले ली।



...मैं काफी थका हुआ था इसलिए बैठ गया...

क्या तुम रात भर यहीं रुकींगे?

नहीं। अगर तुम कुछ देर रुकने ली हम साथ ही वापस चलेंगे।







अचानक वह लारा लूके लम्बे लम्बी.

हा हा हा
मेरे मददगार आ गए हैं।
अब तू मेरा कुछ नहीं
बिगाड़ सकता।

वह व्यक्ति फौरन मेरी आँद देकर चिल्लाया

पहलवान
वह टाकरा खोल
दो जल्दी।

!!!

लेकिन मैं कुछ करता उससे
पहले ही

गुर्र...गुर्र...

आह!

अबले पल सारे कुत्ते उस पर दूट पड़े

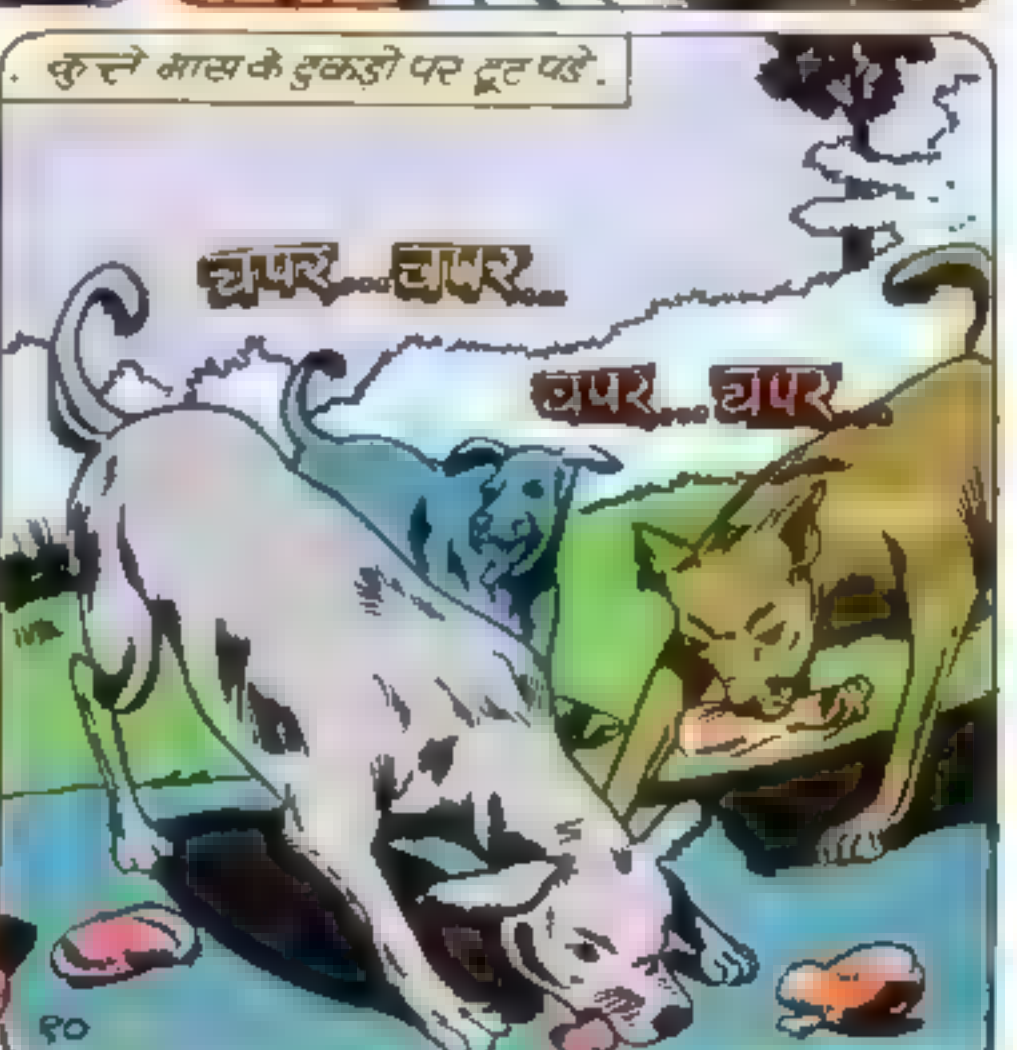
गुर्र...गुर्र...

गुर्र...गुर्र...

हा...हा...हा...

ई...ई...ई...

पल भर में ही कुत्तों ने उसकी सिकका-
बोली कर डाली



अच्छा मौका देख मे भाग खड़ा हुआ



...और फिर मैं कब्रिस्तान से बाहर नहीं आ सका



... फिर अचानक उसने काली बिल्ली का रूप धारण कर लिया.



... और मेरी गर्दन में दास गड़ा दिये



मैंने पूरी शक्ति लगाकर उसे दूर झटक दिया

धुर्र... धुर्र...



और दोबारा भाग खड़ा हुआ

अपना!



इस बार मैं अपने कमरे में पहुँचकर ही रुका था

धड़

आह!



बिस्तर पर गिरकर मैं भय के कारण बेहोश हो गया था..

... और अब मुझे होश आया...

उफ!
यह क्या है



सुद को आइने में देख मैंने होश उड़ गए ,

यह मुझे
क्या हो गया है यह
कैसी बीमारी है ?



तभी आइने में उस चुड़ैल की छवि उभरी...

यह बीमारी
नहीं, मेरा प्रतिरोध
है! हा...हा...हा...

त.
तुम...!



...मैंने मुड़कर देखा, मगर कमरे में कोई नहीं था।
वह सिर्फ आइने में नजर आ रही थी



मैं तुझे चेतावनी
देने आई हूँ। अब हर
अमावस की रात मैं
तुझे कटा करेगी, जिससे
तेरी यह बीमारी बढ़ती
चली जाएगी और धीरे-
धीरे तेरा यह शरीर गल-
सह जाएगा। हा...हा...हा...

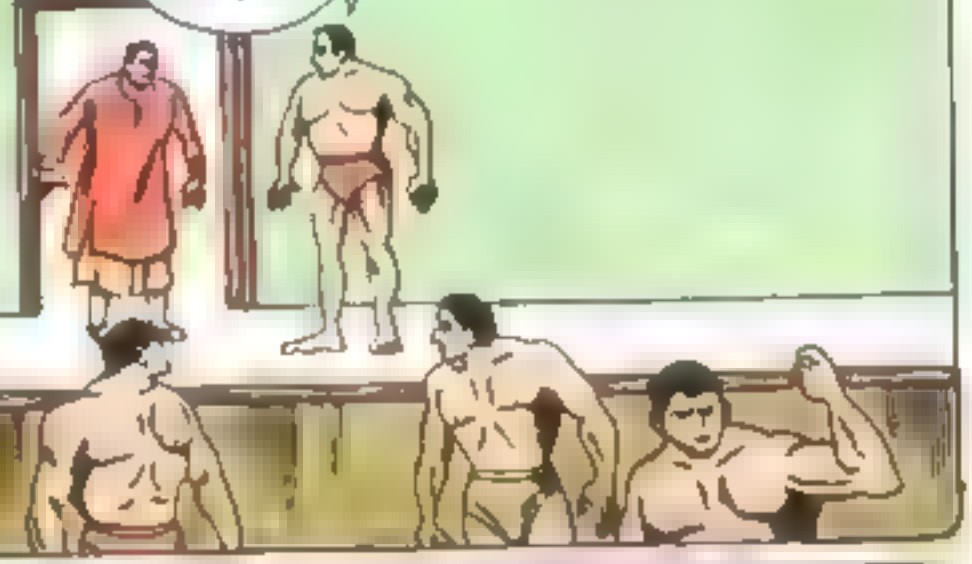
...फिर वह गायब हो गई

हा...हा...हा...!
हा...हा...हा...



..सुबह होते ही मैं अच्चाड़े पहुँचा

ऐ, कौन
हो तुम?



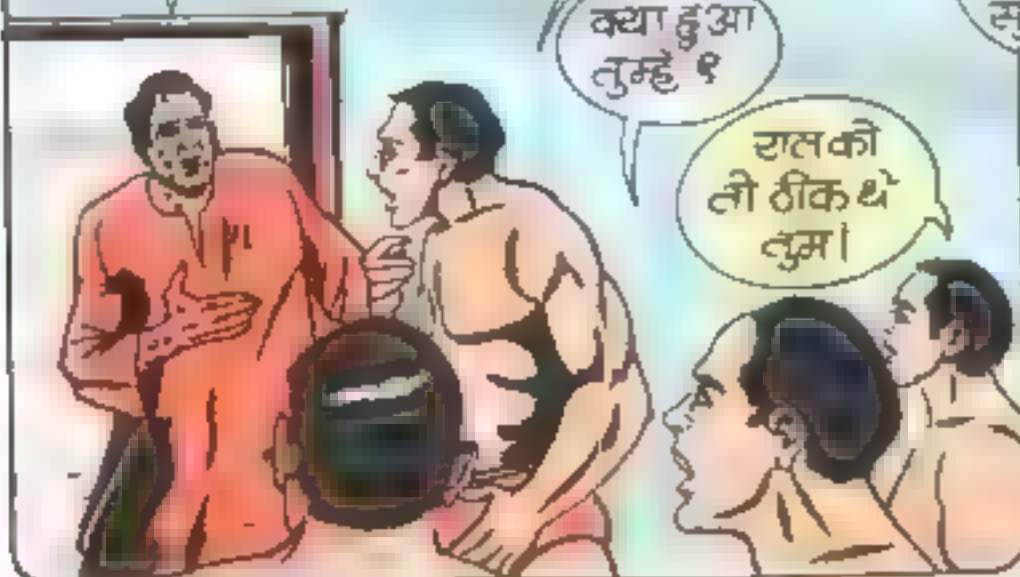
मैं विजय
हूँ प्रेमचंद!

विजय?

विजय?

क्या हुआ
तुम्हें?

रात को
ले ठीक थे
तुम।



..तभी गुरु जी वहाँ पहुँच गए

गुरु जी मैं
बर्बाद हो गया..!
सुबक..सुबक..

लेकिन
यह सब
हुआ कैसे?



... सबने मेरी कहानी ध्यानपूर्वक सुनी।

ओह तो तुम प्रेतात्मा का शिकार हुए हो।

हां गुरुजी! उसने मुझे घेतावली दी है कि हर अमावस की रात को वह मुझे काटने आएगी।



चिंता मत करो। हम तुम्हारी सहायता करेंगे। आने वाली अमावस को हम तुम्हारे साथ ही रहेगे।

धन्यवाद गुरुजी!



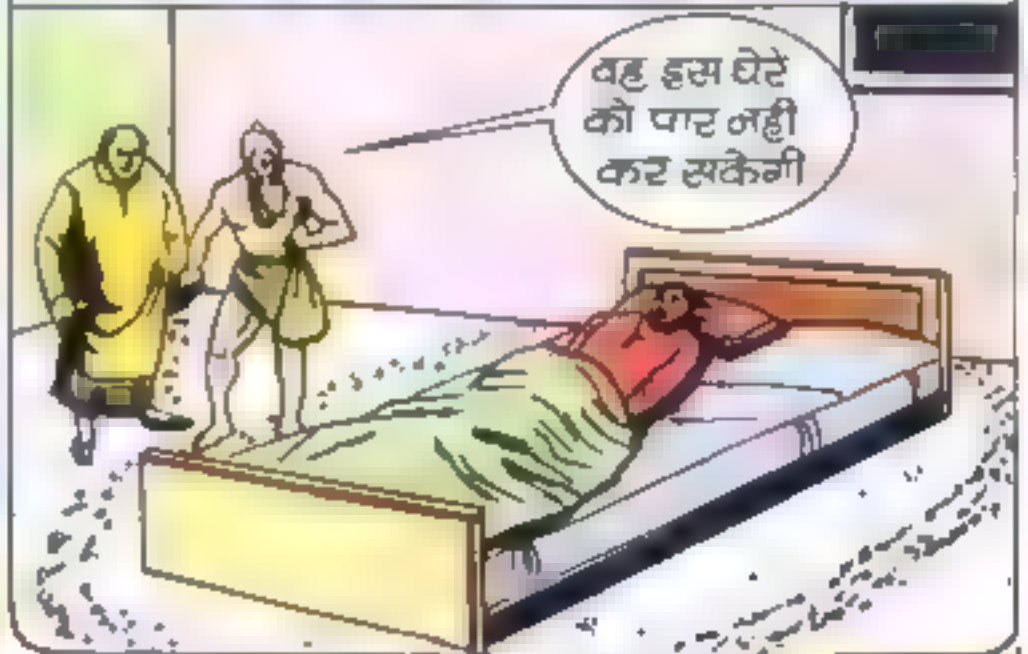
.. और जब अमावस की रात आई

विजय! यह बहुत पहुंचे हुए लोभिक है। तुम्हारे साथ इसी कमरे में रहेगे। जबकि मैं अपने चेलों के साथ बाहर पहरा दूंगा।



.. लोभिक ने मेरे बिस्तर के गिर्द भभूत से घेरा बनाया

वह इस घेरे को पार नहीं कर सकेगी



.. फिर निकट ही आसन जमाकर बैठ गया वह

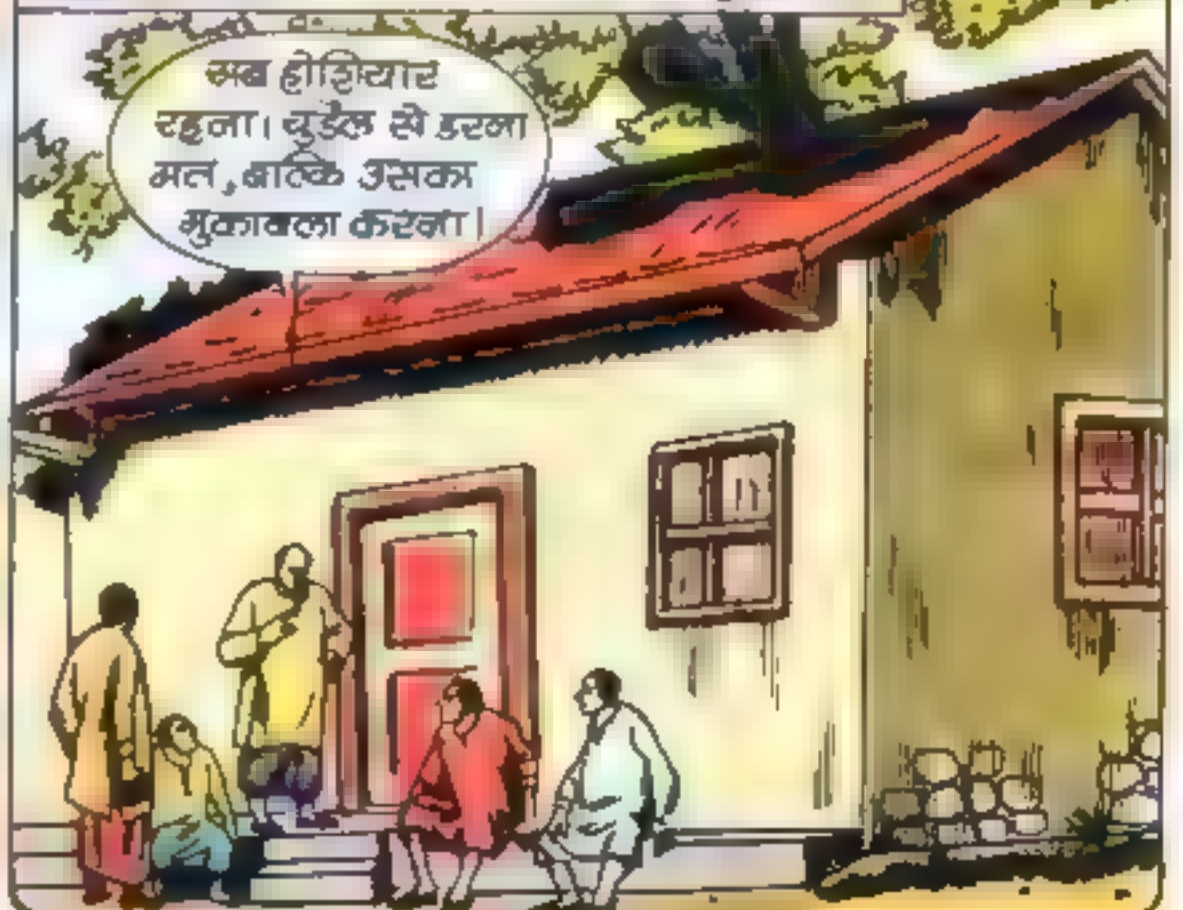
तुम बाहर जाओ पहलवानजी।

अच्छा महाराज!

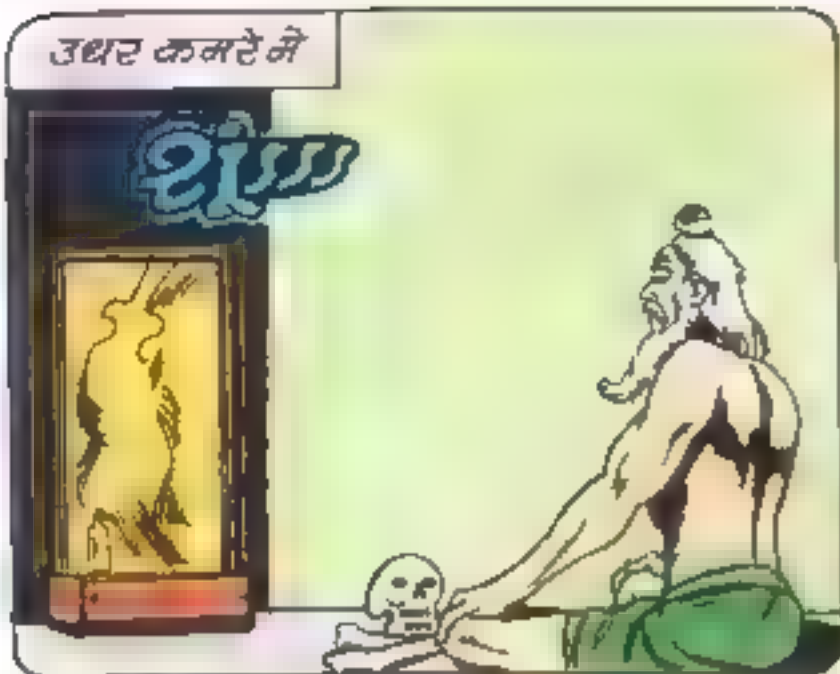


.. गुरु जी बाहर अपने चेलों के पास पहुंच गये

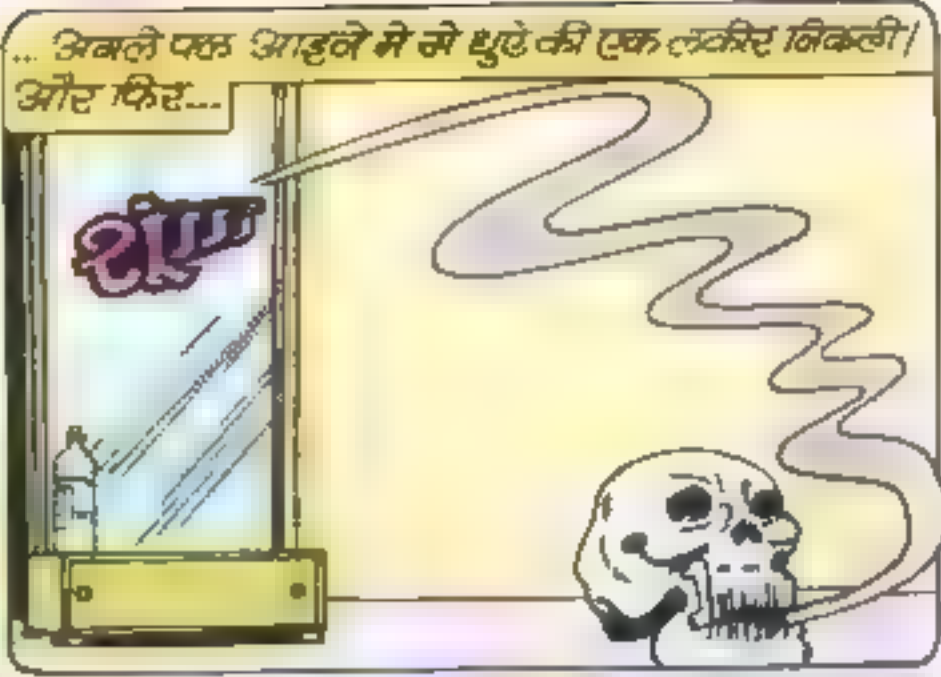
अब होड़ियाट रहना। दुईल से डरना मत, बल्कि उसका मुकाबला करना।



उधर कमरे में



... अगले पल आइने में मेरे धुंटे की एक लकड़ी निकली।
और फिर...



परिणाम स्वरूप चुड़ैल सोपड़ी में प्रवेश कर चुकी थी।



... अगले पल...



... मैं असहाय-सा पड़ा तमाशा देख रहा था...

मैं आ गई
हूँ लाशिक!



वापस चली
जा, वरना
पछताएगी!

हा हा हा...!
तू मेरा कुछ नहीं
बिगाड़ सकता। तेरे
पास वह शक्ति
ही नहीं है।

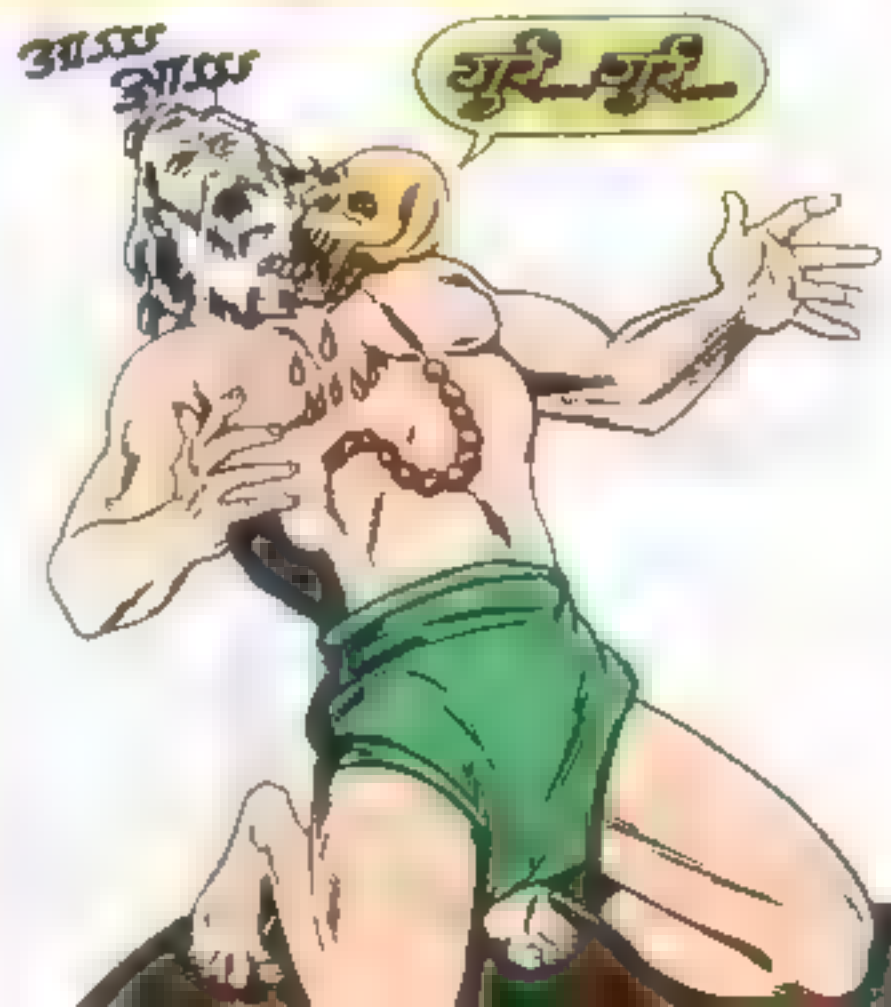


दुष्ट आत्मा!
मेरी शक्ति को
ललकारती है।

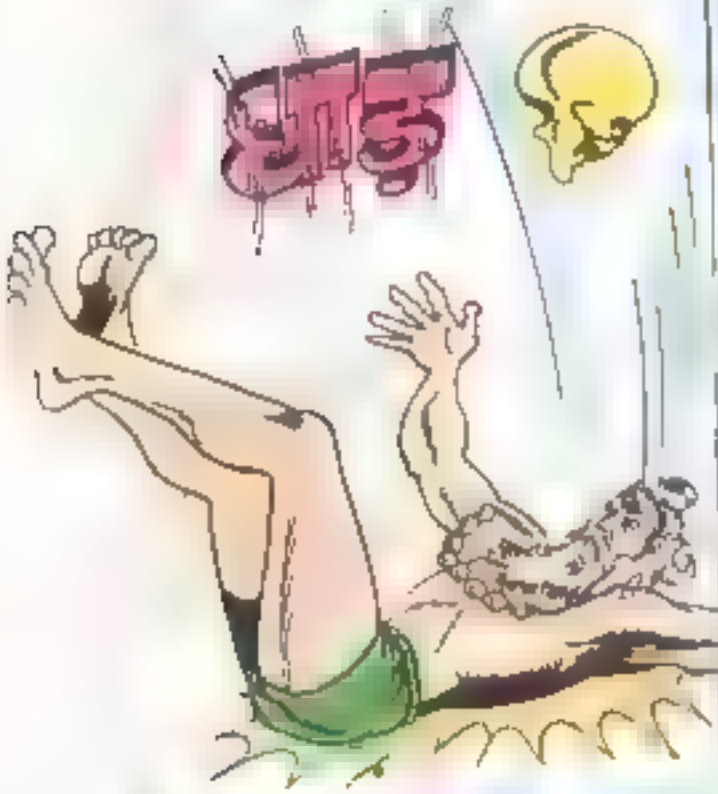


.. अमले ही फल खोपड़ी वें तांत्रिक के अले में दाँल नडा दिये ..

.. तांत्रिक बुरी तरह घटपटा उठा ..



.. फिर वह नीचे गिरा और शाल हो गया ..



.. अगले पल वहां धुआं-सा उठा ..



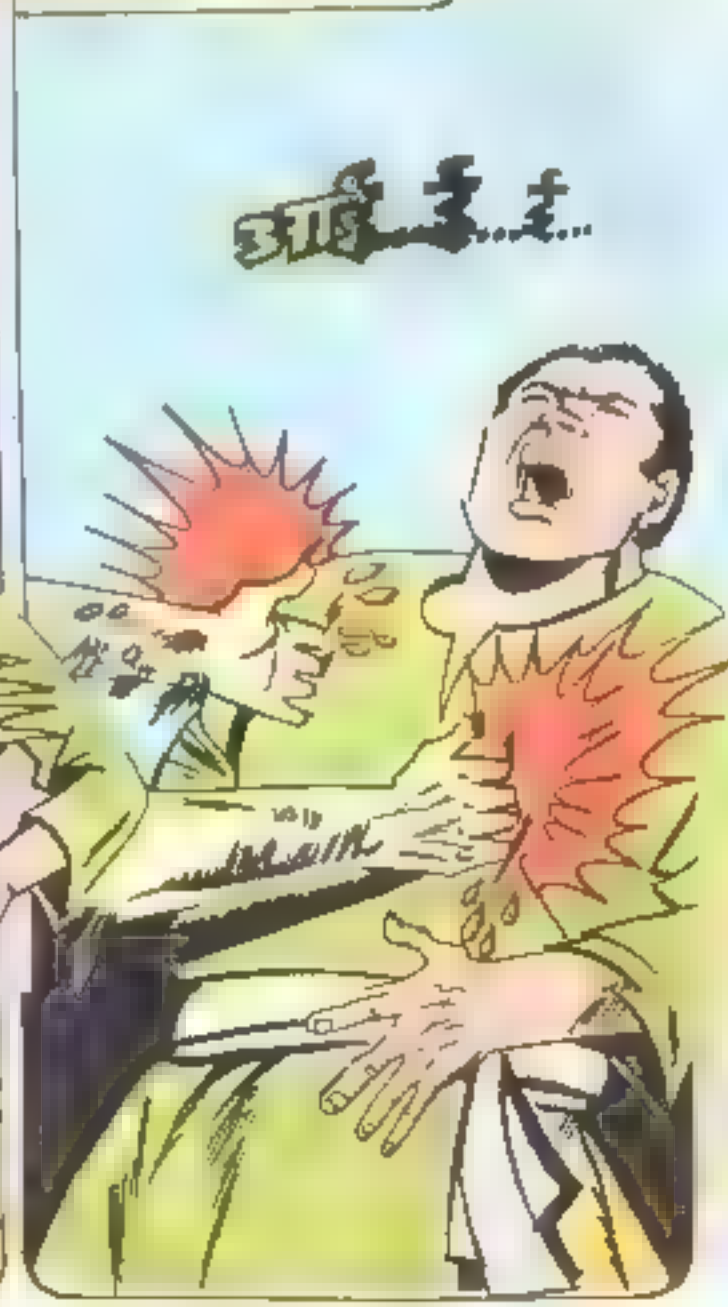
.. और चुड़ैल सामने आ गई ..



और जवाब उसे हस प्रकार मिला ..



... चुड़ैल के नुकीले पंजे पहलवान के हार में धसते जा रहे थे



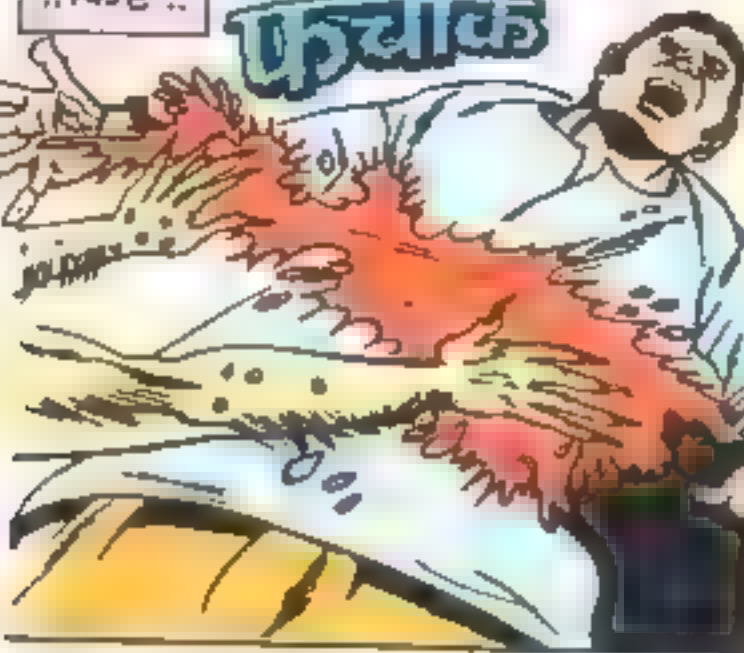
..किर..

फट्याक

...छोट सुलकर मुरु जी होष लेखे साब भीतर आह...

हे भगवान!

ही...ही...ही...



आओ-आओ,
मैं सबको खा
जाऊंगी!

मुरु जी!



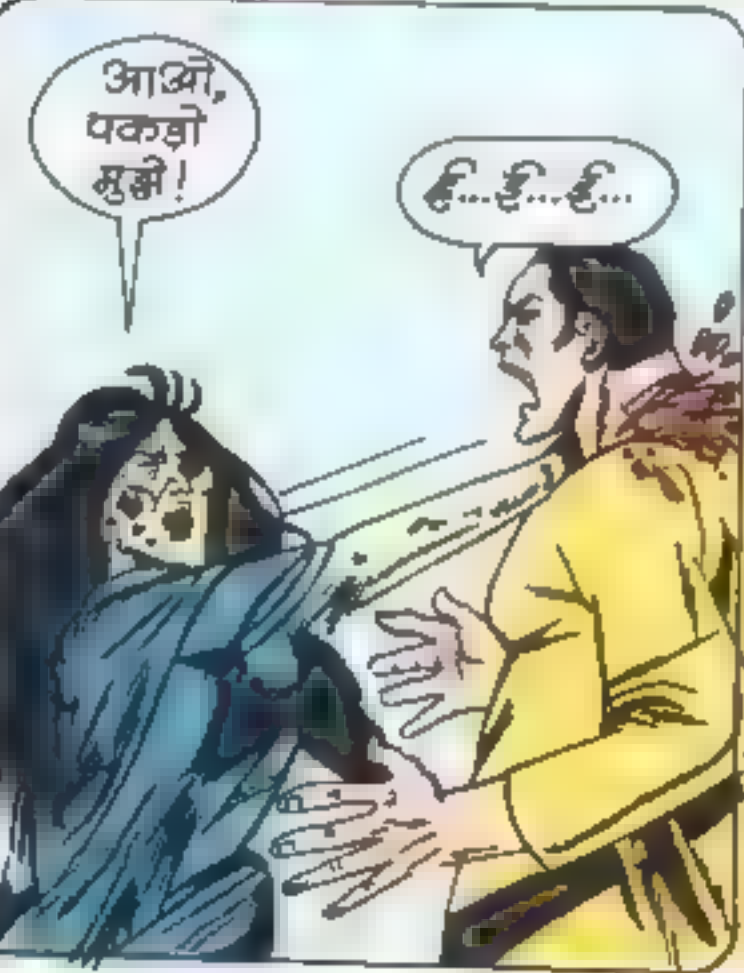
ठरो मत।
सब मिलकर
पकड़ लो इसे!

ही...ही...ही...

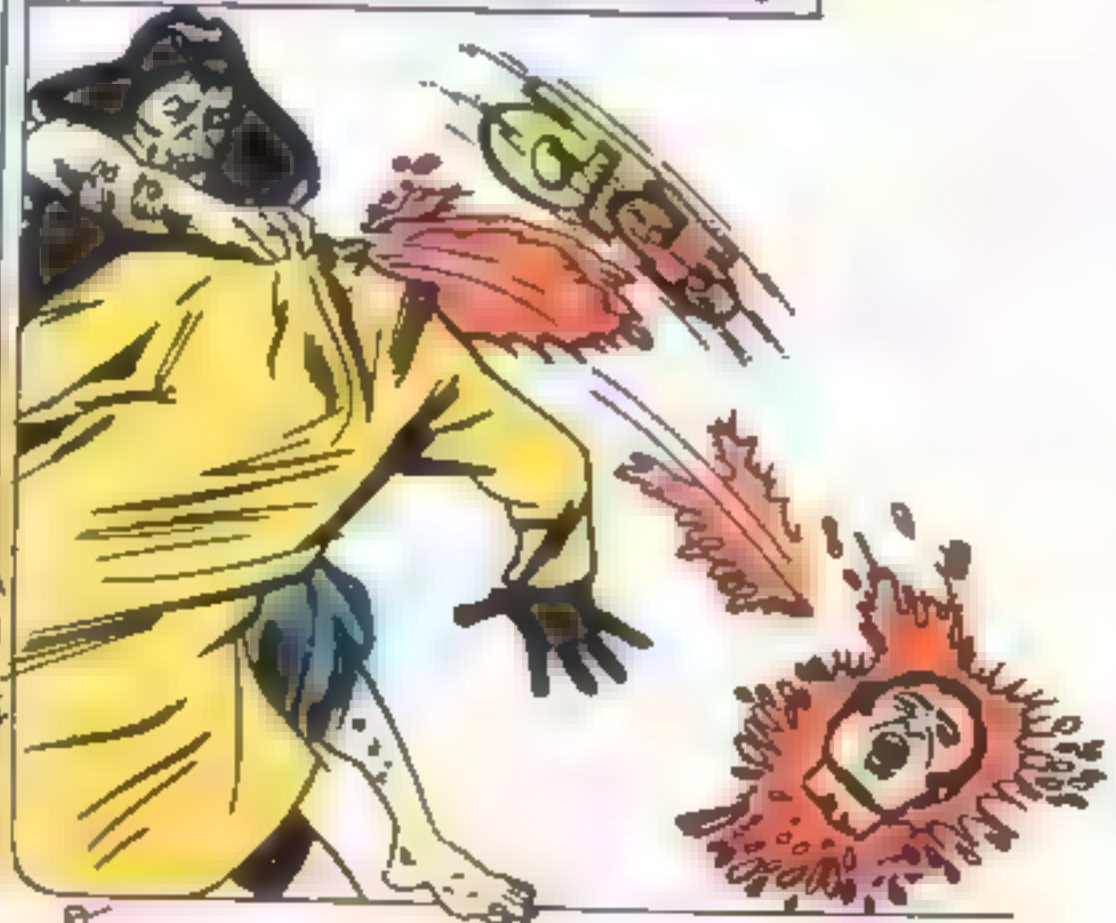


आओ,
पकड़ो
मुझे!

ही...ही...ही...



...उम्की मर्दन छरीर ले अलख हो गई...



दूसरे पहलवान का उमने पेट फट डाला...



हा... हा... हा...



हे भगवान!



... फिट के तब मुझे अकेला छोड़कर भाग करे हुए...



... और अचानक मुझे भी भागने का प्यार आया...

धुर्र... धुर्र...

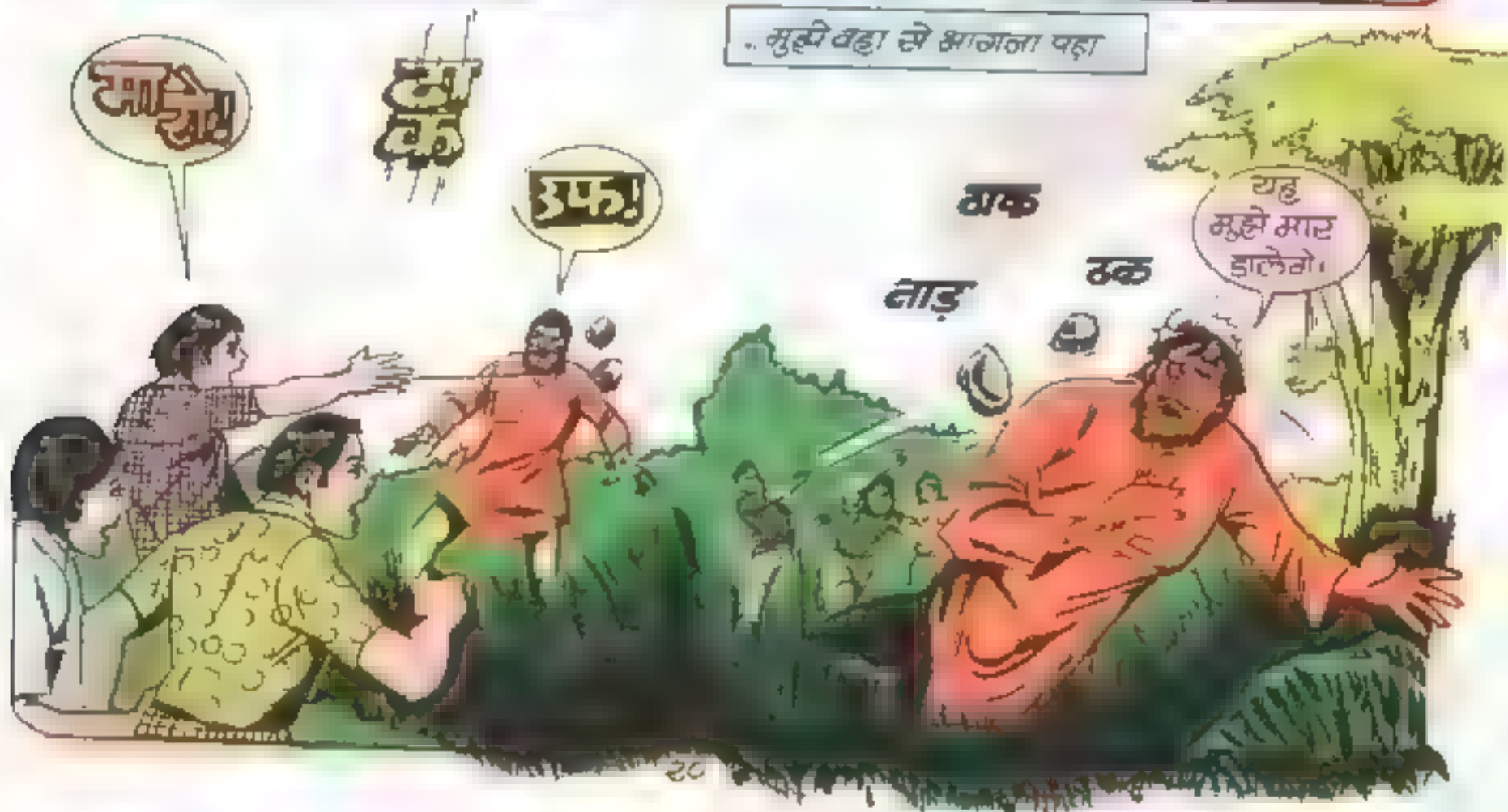
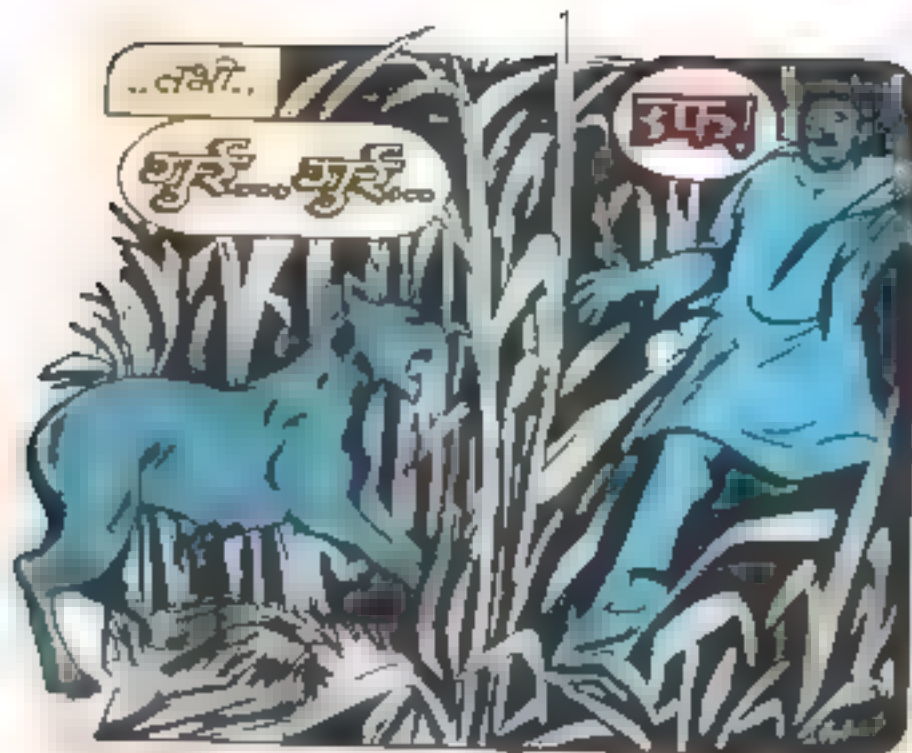


... मैं चिड़की से कूदकर भागा...



... और खेतों में जा घुसा...





...गाव छोड़कर मैं जंगल में निकल आया। मैं फिर दूसरे बांधों में भटकता रहा, लेकिन हर जगह मुझे लोगों की घूणा का सामना करना पड़ा...



...लोगों की घूणा से बचने के लिए मैं जंगल में छुपकर रहने लगा...



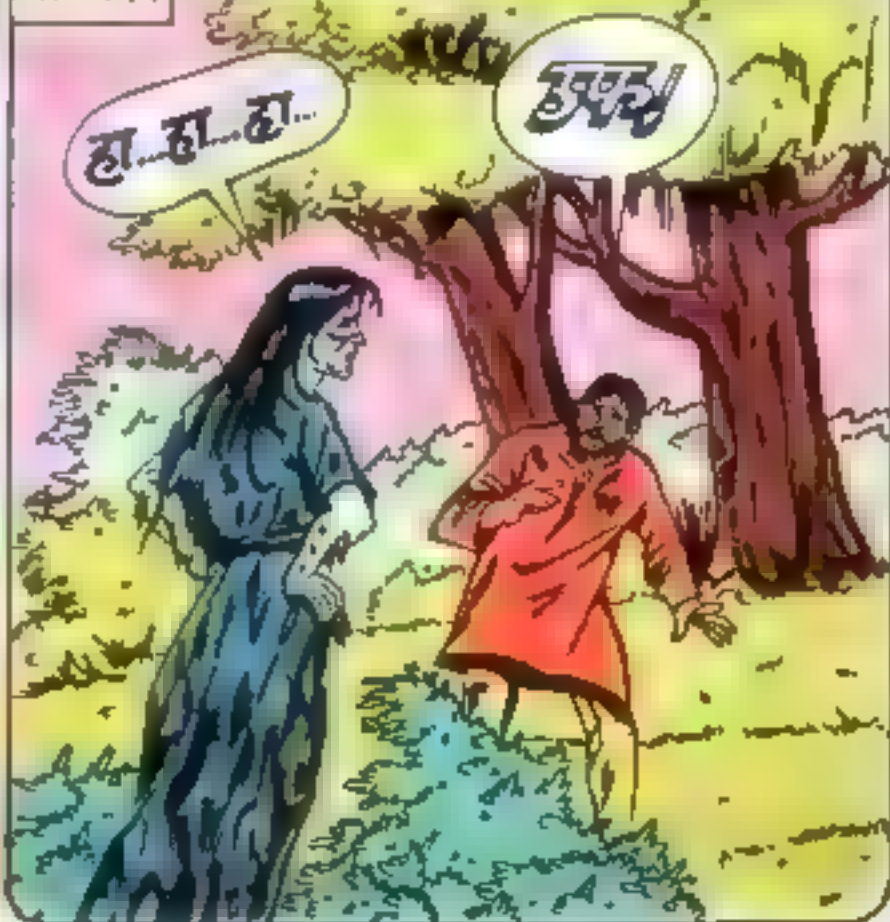
...फिर एक दिन एक साधु महाराज वहां से गुजरे।



...और मैंने उन्हें अपनी पूरी कहानी सुनाई।



...अनलपुर जाने के लिए मैं जंगल से गुजर रहा था कि...





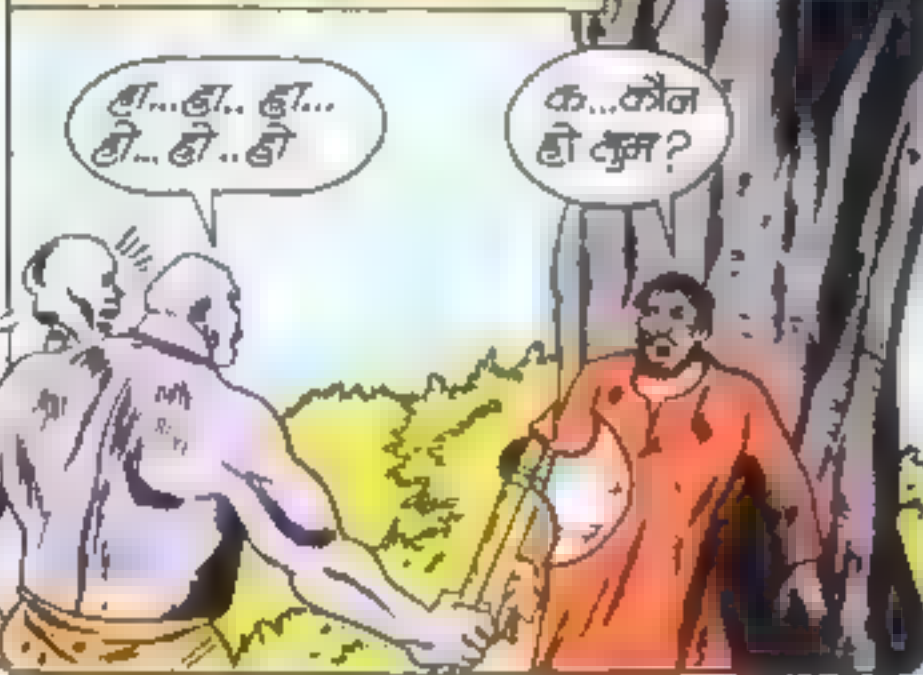
...अचानक पेड़ों के पीछे प्रकाश चमक...



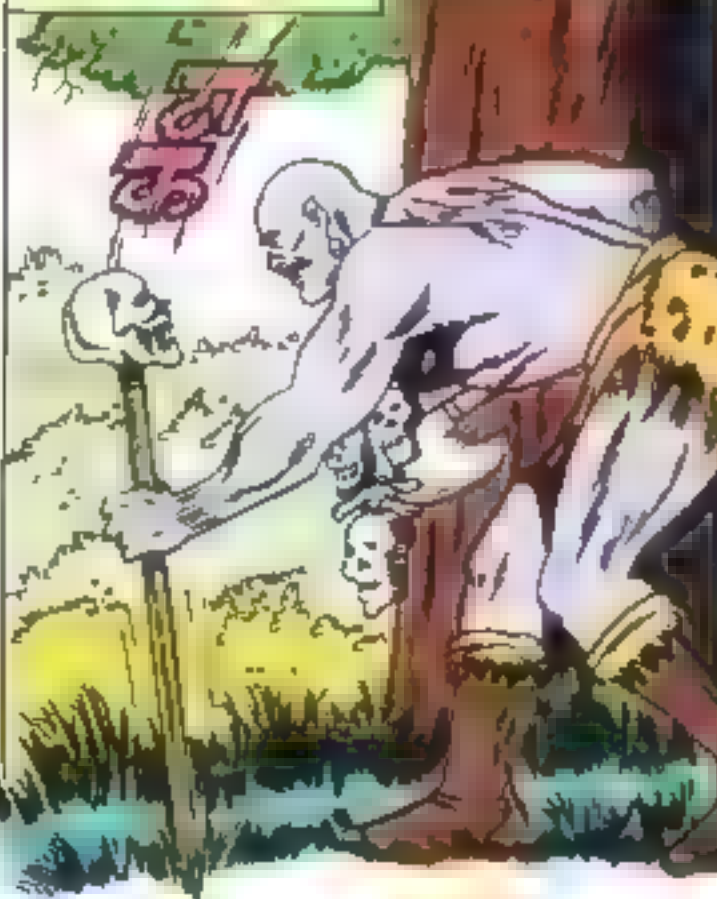
...फिर मैं भय से उछल पड़ा



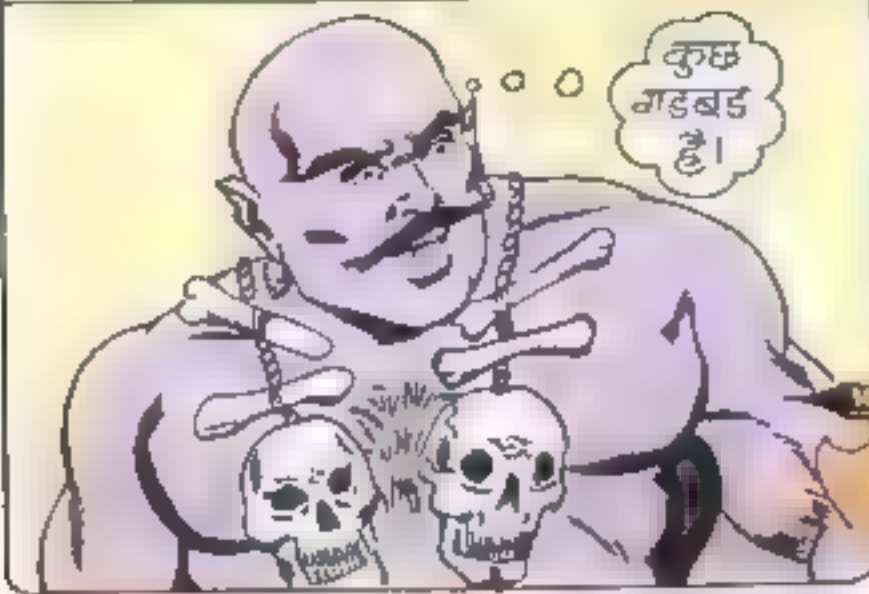
...वह मेरी ओर बढ़ा आ रहा था.



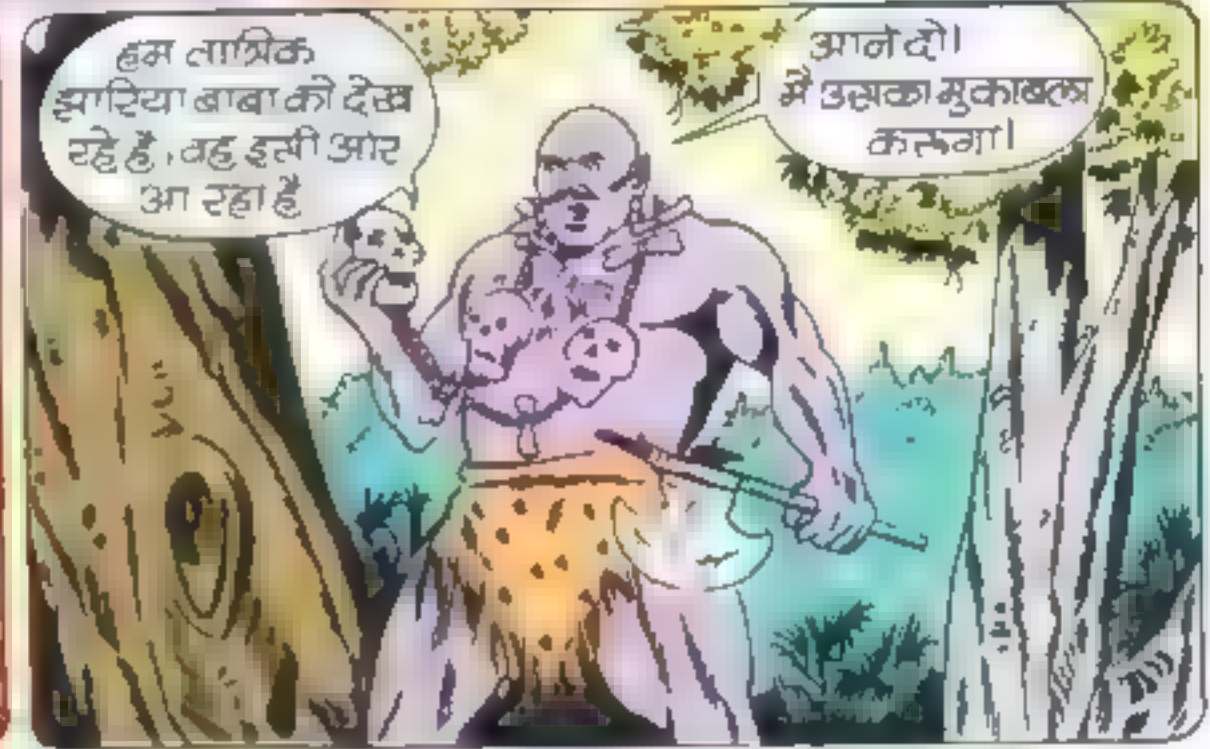
...कहकर उसने स्त्रीपड़ी वाला डण्डा धरती में गाड़ दिया..



.. फिर अचानक वह चौंका और कुत्ते की तरह
हुवा में कुछ सूंघने लगा ..



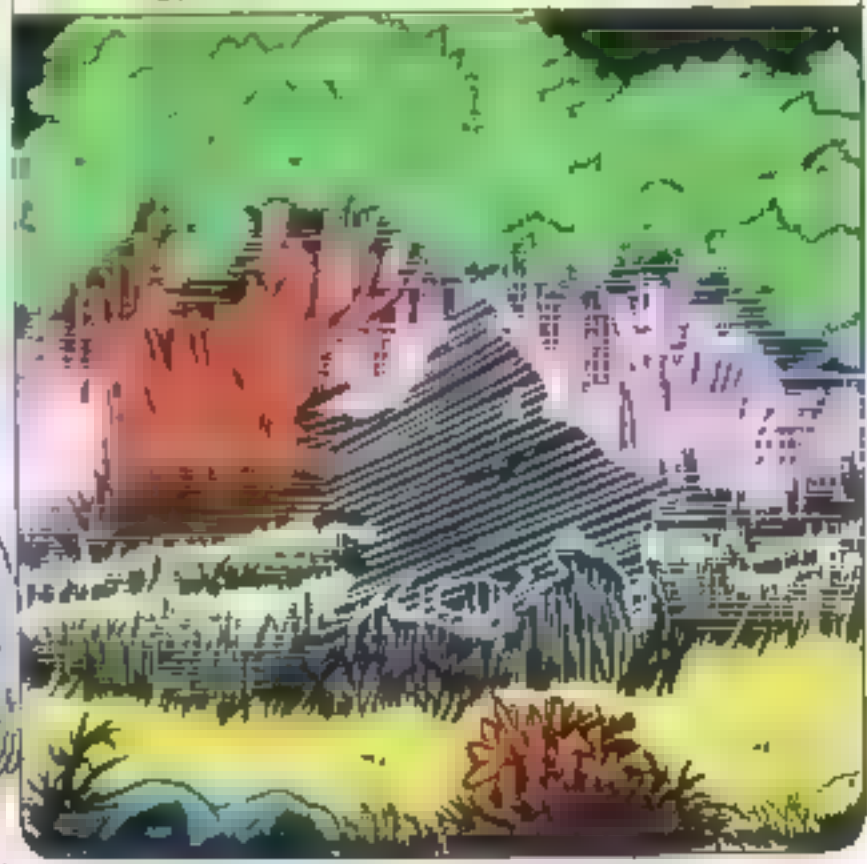
.. लम्बी उसके गले में लटकी खोपड़ी जैसे जीवित
हो उठी ..



.. पहली बार मेरे मन में खुशी की तरह उठी ..



लम्बी दूर मैदान में एक धारा-सी उभरी..



... और जब दृश्य स्पष्ट हुआ...



... मैं आश्चर्य से उन्हें निकट आते देखा रहा था ..

झारिया!

कैलाश



... हमारे निकट पहुंचकर झारिया बाबा ने भैंसे को रोका, फिर मेरी ओर देखा ..

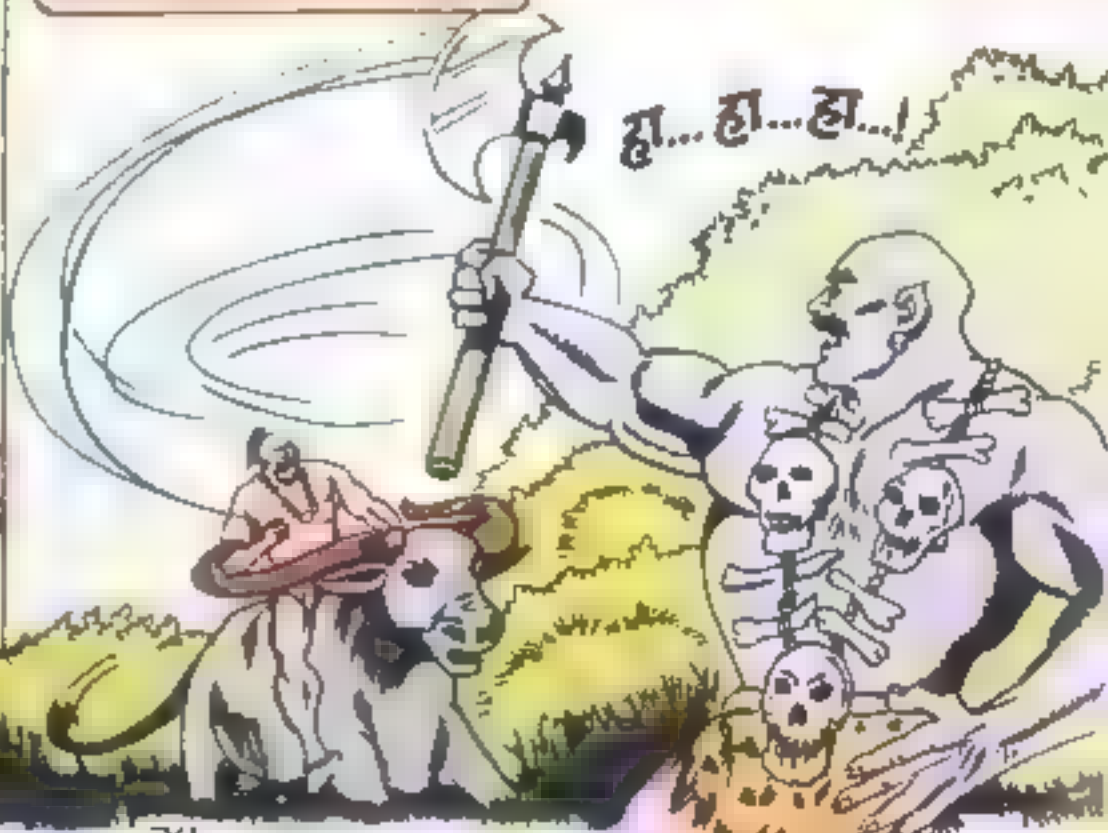
कैलाश

तूने हमें याद किया, इसलिए हम तेरी सहायता को चले आए!

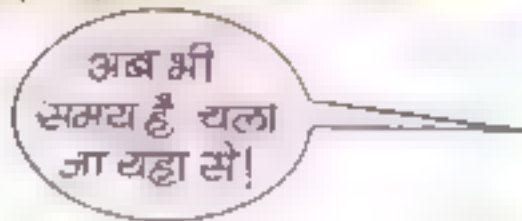
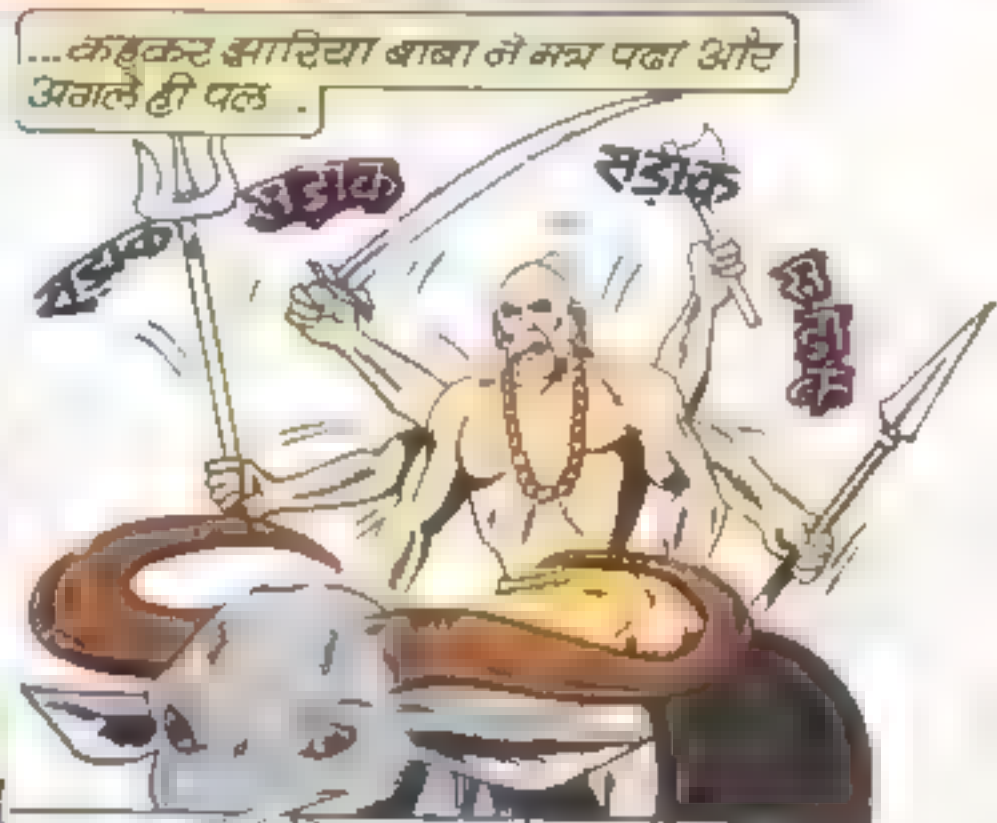
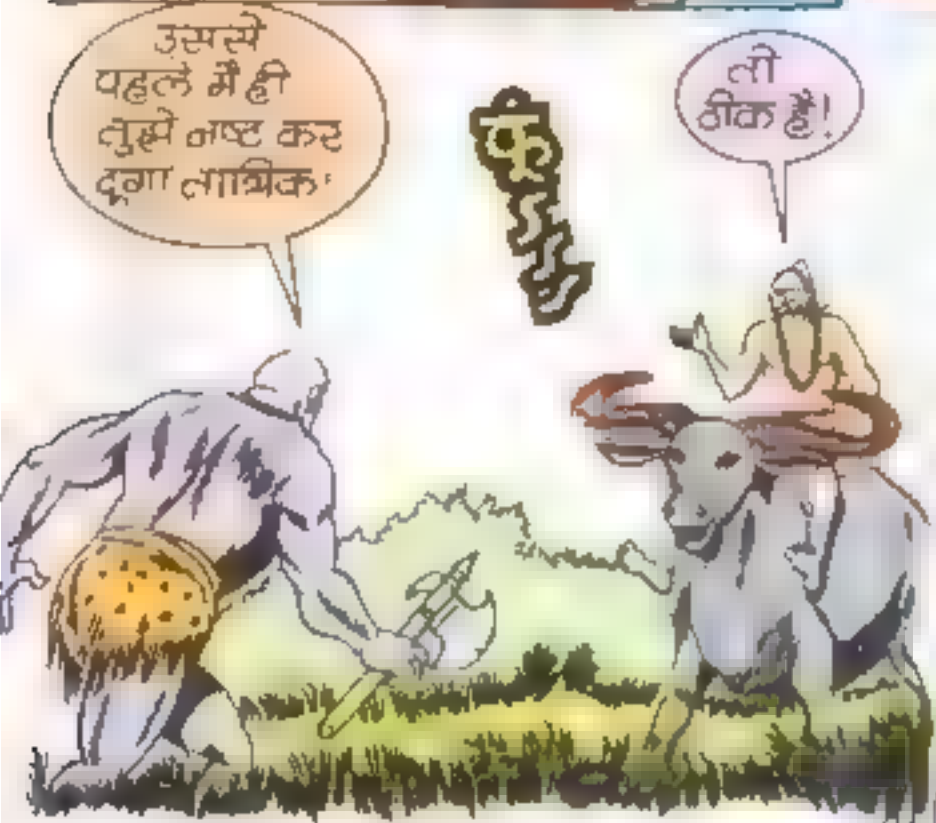
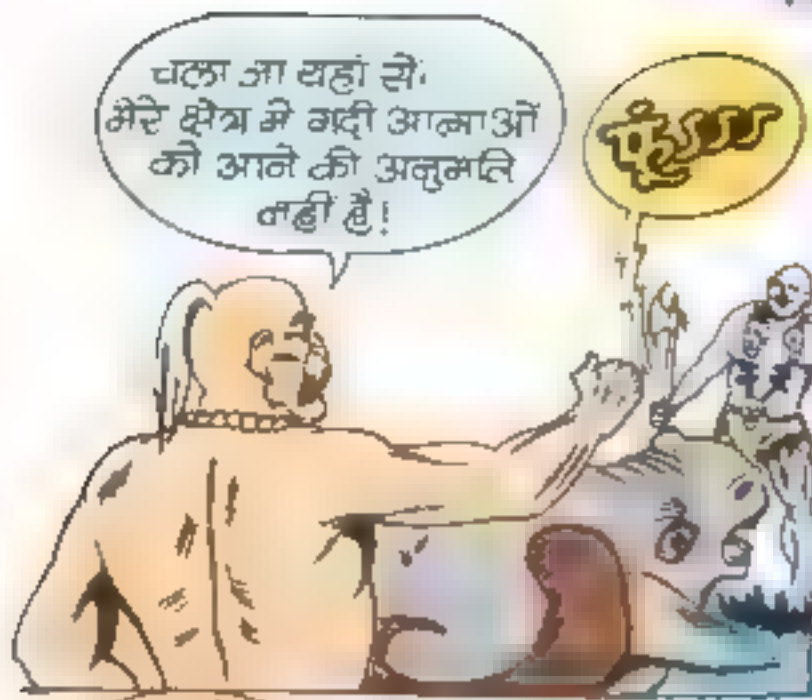


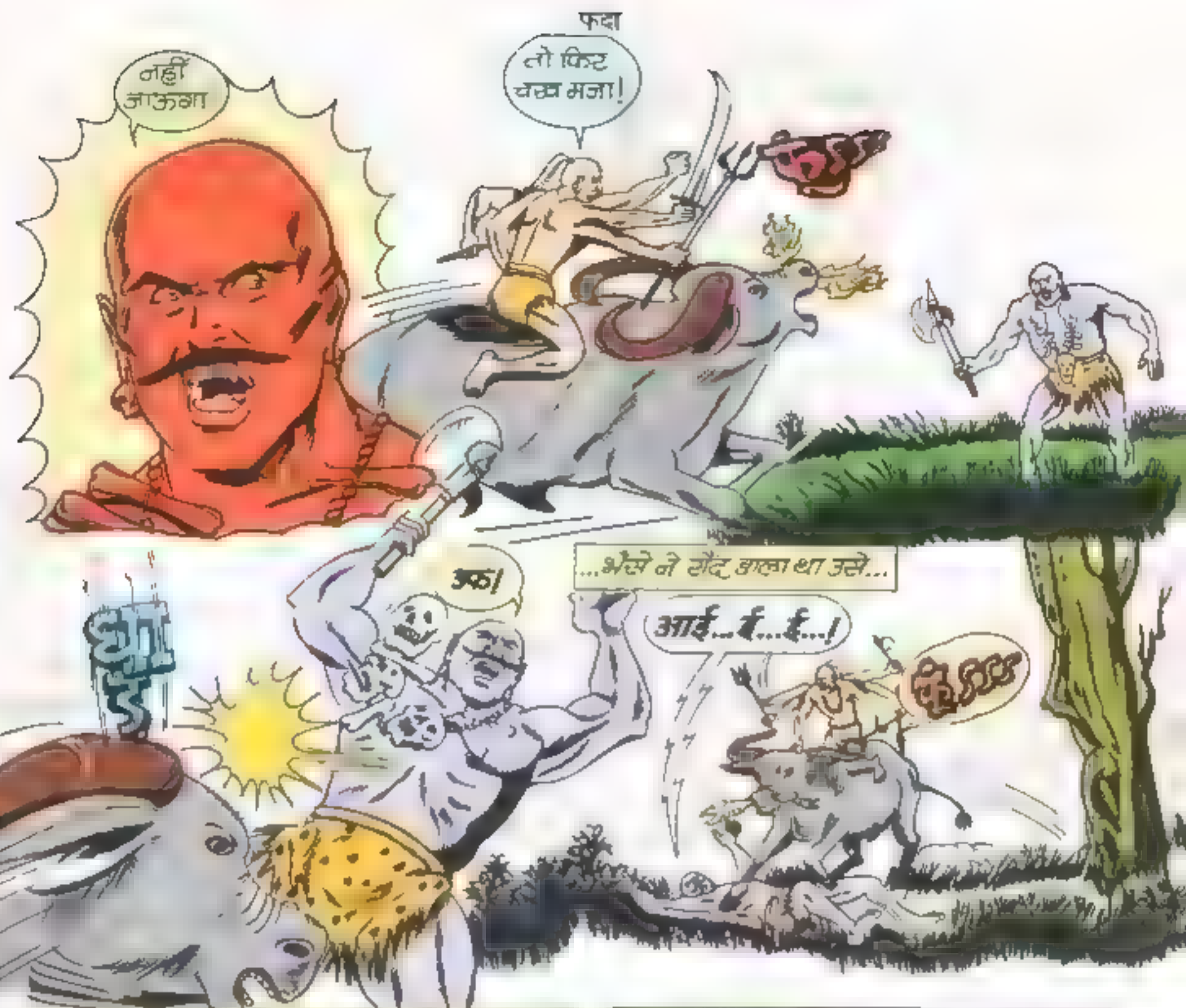
... लोकेन मैं कुछ कहता इससे पहले...

... आश्चर्य जनक ढंग से फरसा वापस घूमकर उसके हाथ में आ गया...



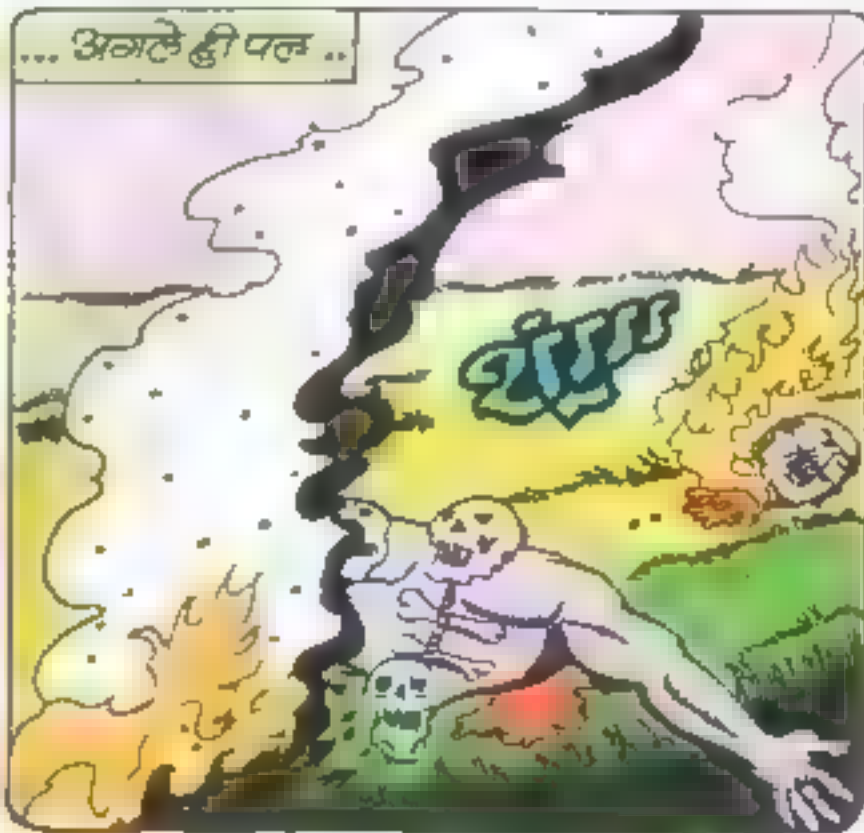
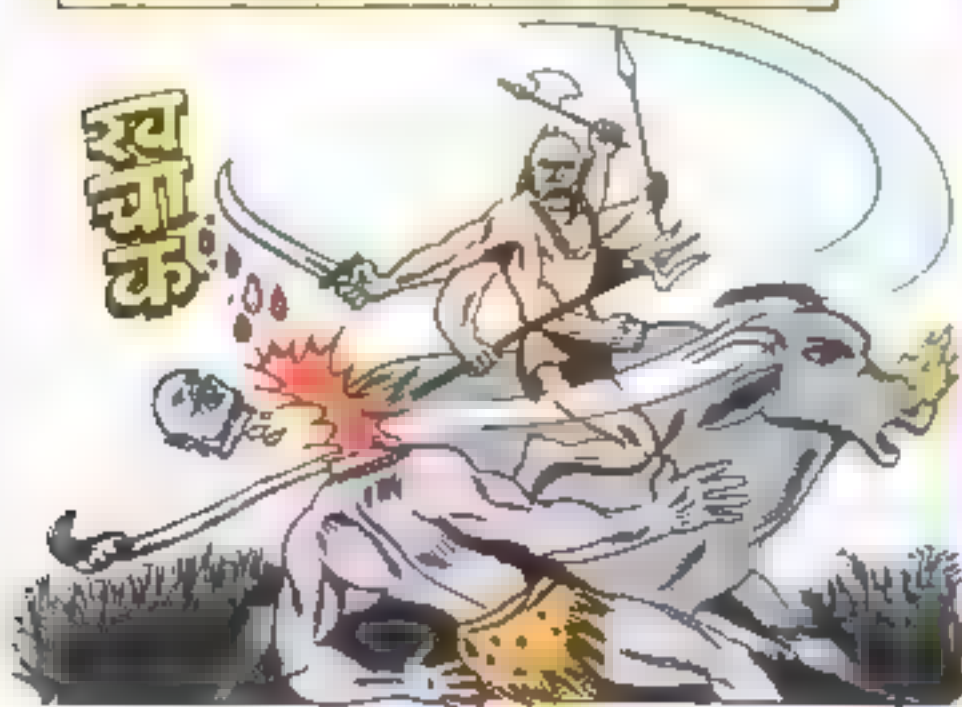
हा... हा... हा...





.. काळिया एक बार उठा। तभी ह्यालिया बाबा भैसे को मोड़कर उसके लिकट जा पहुँचे। और...

... अगले ही पल ..



... अब वहां सिर्फ मैं और झारिया बाबा थे...



तेरा शत्रु
नष्ट हो
चुका है!

धन्यवाद
बाबा! मगर
वह चुड़ैल!

हम जानते हैं।
सब पता है हमें
उस चुड़ैल का प्रबंध
भी हम ही करेंगे।

... कहकर उन्होंने भीस के गले से रस्सी निकाली...



ले इसे संभाल!
अगली बार जब
चुड़ैल तेरे निकट
आए तो यह फंदा
उसके गले में
डाल देना!



मगर
बाबा...!

सवाल मत
पूछ। तेरा काम ही
चुका है। अब चला
जा यहां से!

... उनके स्वर में छुपा आदेश सुनकर मैं
वहां एक पल भी नहीं ठहरा था...

... यह कहानी सुनाने के बाद विजय ने अपने
कपड़ों के भीतर से रस्सी निकाल कर दिखाई।



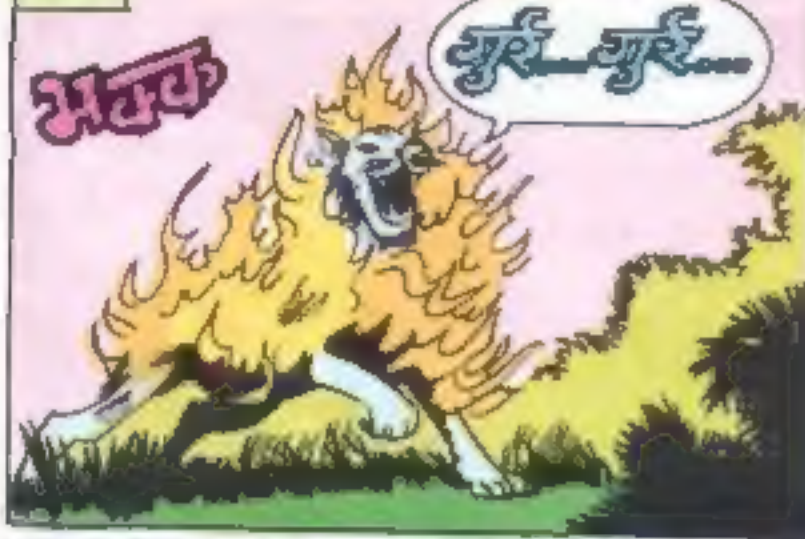
यह वही रस्सी
है। कमजोरी की वजह
से मैं यह फंदा उस
चुड़ैल के गले में
नहीं डाल सका!

पर अब
तो वह चुड़ैल
भाग चुकी
है!

लेकिन वह
वापस आएगी। अभी
वह मुझे काट नहीं
सकी है। वह जरूर
वापस आएगी। तुम
मेरी मदद करो!



अगले ही पल उसके हारिद में आग लग गई।



और पलभर में ही वहां सिर्फ राख का ढेर पड़ा था।



और फिर एक और आश्चर्यजनक घटना घटी।



धीरे-धीरे उसका हारिद अपनी असली हालत में आ गया था।



मुझे खुशी है, तुम्हें कष्ट से मुक्ति मिल गई, विजय!



समाप्त

गुरुदेव के
कारण तुम्हें अपने हाथों से
न मारने की कसम खा बैठा था मैं।
किन्तु मेरी मां की आत्मा चीख-चीखकर
मुझे धिक्कार रही है। उसका एक-एक शब्द
मेरे कलेजे में नश्वर की भांति चुम रहा है।
तुम्हारी मौत के साथ ही अब मेरी
मां की आत्मा शान्त होगी।
मरना ही होगा
तुम्हें।

नहीं। मेरे मैया
को मृत मारो। इन्हें माफ कर
दो अंकल। अगर ये मर गये तो
हम भी जिन्दा नहीं रहेंगे हम
भी अपनी जान दे
देंगे।



प्रतिशोध की आग में झुलसता स्टारो अपने राजगुरु
आर्गोस को दिया वचन भुलाकर एक बार फिर मौत
बनकर आ खड़ा हुआ राम-रहीम के सिर पर। किन्तु किसकी है
यह आवाज जो राम-रहीम के प्राणों की भीख मांग रही है?

नन्ही सी... प्यारी सी...
मासूम गुड़िया सी लड़की
जो राम-रहीम के दिमाग पर
छिपकली की भांति छा गयी।

“बंडरगाल”